काव्यविधा-पञ्चदलम् (तान्का)

डॉ. ओमप्रकाश पारीक
एसोसिएट प्रोफेसर, कॉलेज शिक्षा निदेशालय, राजस्थान

(12)
हुतात्मनस्तु पितरौ
शोकं हर्षे परिवर्तयन्
प्रमातः
पुत्रस्य मृत्युञ्जयत्वं ह्यत्र ।।
शहीद के
माता- पिता, शोक को हर्ष मे
बदलते हुये
प्रमाणित कर देते हैं अपने पुत्र के
मृत्युञ्जय होने को ।।

(13)
मृत्तिका ह्यज्ञानं
खनित्वा प्राप्तं ज्ञानं
कूपस्त्रोतस्वत्
पेयमन्यदेकत्रं
तु पूय्यते द्रोणीवत् ।।
मिट्टी रूपी अज्ञान को
खोद कर प्राप्त ज्ञान
कुये के जल की भाँति
प्यास बुझाता पेय होता है दूसरा
(बाहर से) इकट्ठा तो सड
जाता है होज के पानी की भाँति ।।

(14)
शिवसामीप्ये
विष्णुपूजामिच्छन्
हिमालयेन प्रवाह्य
भावनां निजां
प्रेषिता गंगा समुद्रम् ।।

शिव की समीपता मे
विष्णु की पूजा चाहते हुये
हिमालय द्वारा
अपनी भावना को बहाकर
गंगा को समुद्र की ओर भेजा
गया है ।।

(15)
निर्धनस्य
अभावक्षेत्रोप्तानि
संभावना बीजानि
सद्भावनाप्रकृतौ
प्ररोहन्ति हि ।।
गरीब के अभाव के
खेत में बोये गये
संभावनाओं के बीज
सद्भावना की जलवायु मे
ही उगते हैं ।।

(16)
सम्पर्के स्नेहः क्व ?
नद्याःस्नेहोपरि
सेतुस्तु जड़ः
नौका च नद्याःस्नेहं स्पर्शयन्ती
तस्याः हृद्येव सञ्चरति
सम्पर्क में भला स्नेह
कहाँ होता है?नदी के
स्नेह(जल)पर
पुल तो जड़ है
और नौका नदी के स्नेह(जल)को
स्पर्श करती हुयी
हमेशा नदी के हृदय में ही सञ्चार
करती (चलती)रहती है